इवान

एक शॉपिंग मॉल गोरिल्ले

की सच्ची कहानी

कैथरीन एप्पलगेट

चित्र: ब्रायन कारस

मार्मिक शब्दों और विचारोत्तेजक चित्रों में, न्यूबेरी मैडल विजेता (कैथरीन ऐपलगेट) और कलाकार ब्रायन कारस ने एक विशेष गोरिल्ले का असाधारण वास्तविक विवरण प्रस्तुत किया है.

एक बच्चे के रूप में कैद किए गए इवान गोरिल्ले को अमेरिका लाया गया था और उसका काम एक शॉपिंग मॉल में खरीदारों को लुभाना था. कई वर्षों बाद, गोरिल्ले के बारे में लोगों की जिज्ञासा दया, उसके इलाज और अंत में आक्रोश में बदली, और उस कोमल प्राणी को एक बेहतर जीवन मिले उसके लिए मॉल के मालिकों पर दबाव बनाया गया.

कांगो से अमेरिका तक, और एक स्थानीय शॉपिंग मॉल के आकर्षण से लेकर पशु कल्याण के राष्ट्रीय प्रतीक तक, "इवान द शॉपिंग मॉल गोरिल्ला" ने मीलों की एक आश्चर्यजनक दूरी तय की थी.

यह उसकी सच्ची कहानी है.

इवान

एक शॉपिंग मॉल गोरिल्ले की सच्ची कहानी

कैथरीन एप्पलगेट

चित्र: ब्रायन कारस

घने पेड़ों के पत्तों की शांति में,
कोमल बाहों में, उस गोरिल्ले का
जीवन शुरू हुआ था.

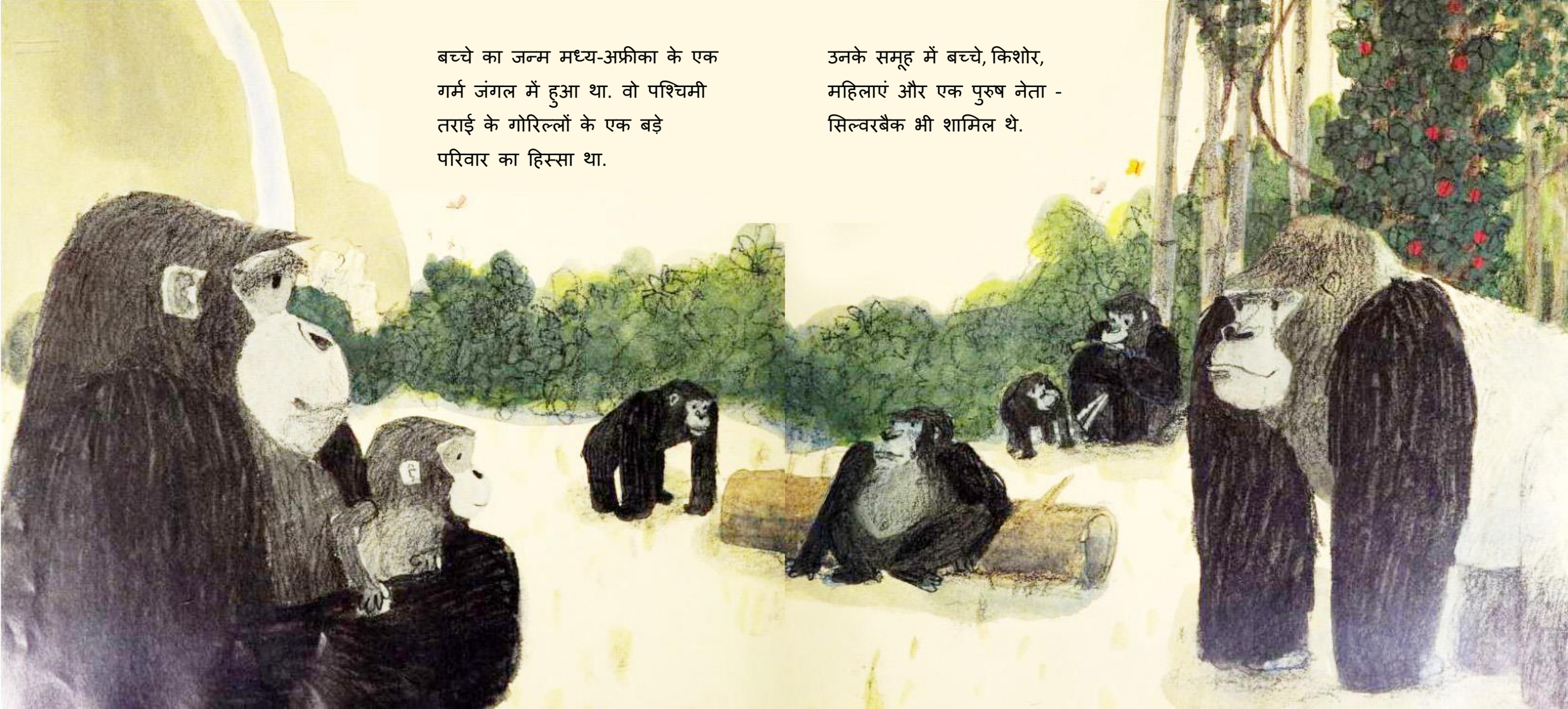

बच्चे का जन्म मध्य-अफ्रीका के एक गर्म जंगल में हुआ था. वो पश्चिमी तराई के गोरिल्लों के एक बड़े परिवार का हिस्सा था.

उनके समूह में बच्चे, किशोर, महिलाएं और एक पुरुष नेता - सिल्वरबैक भी शामिल थे.

बेबी गोरिल्ला जितना बड़ा हुआ, वो उतना ही अधिक खेला. जितना अधिक उसने खेला, उतना ही उसने सीखा.

वो अपनी मां की पीठ पर सवारी करता था. उसने अपनी माँ की हूटिंग की आवाज़ें और उसकी छाती की धड़कनें सुनी.

उसने बूढ़े गोरिल्लों की चतुरता और तेज़ी को करीबी से देखा. वे कुश्ती लड़ते थे और लताओं में से एक-दूसरे पीछा करते थे और झूलते थे.

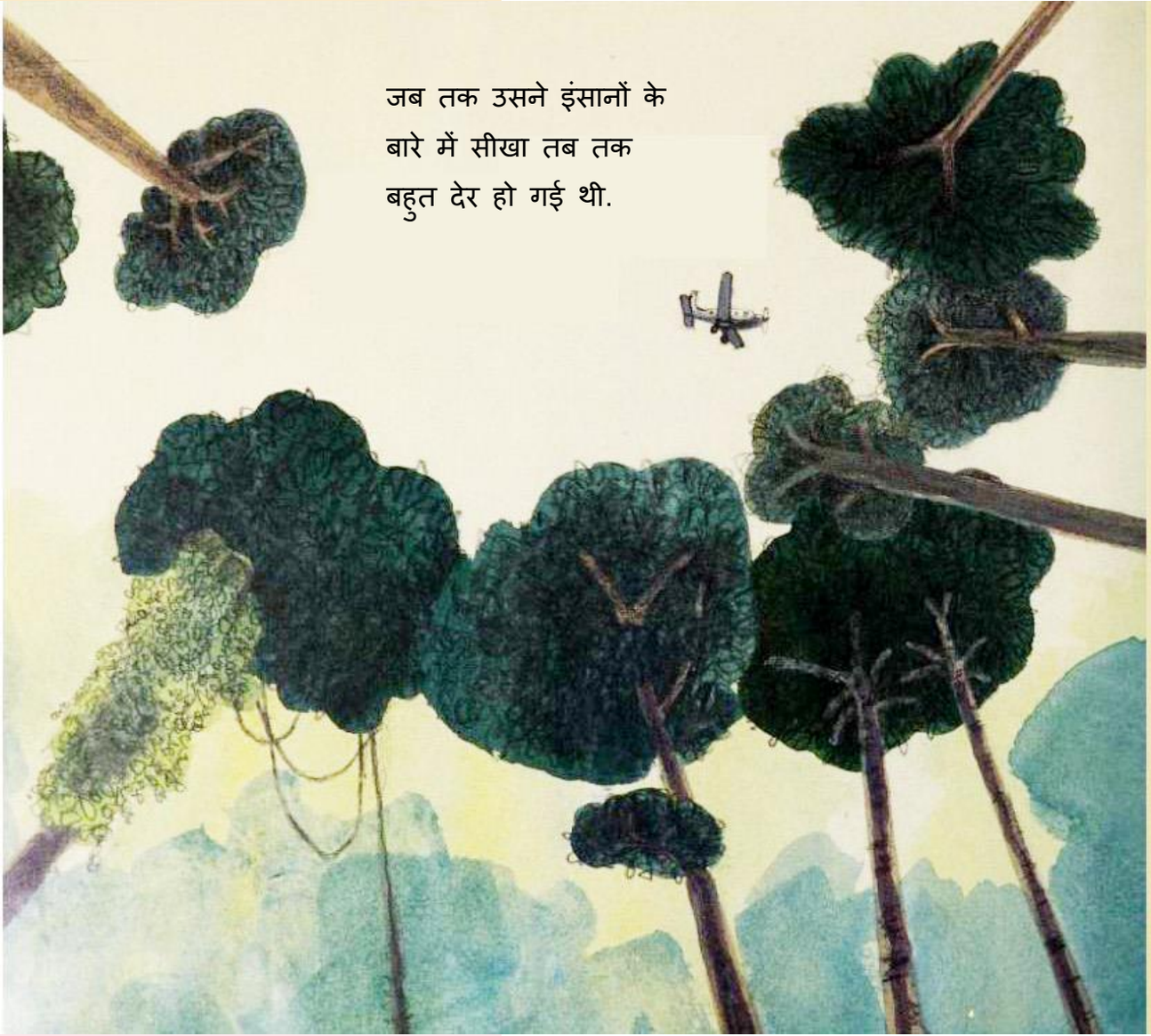

जब तक उसने इंसानों के
बारे में सीखा तब तक
बहुत देर हो गई थी.

शिकारियों ने तेज बंदूकों और क्रूर हाथों से उस
छोटे गोरिल्ले और एक दूसरे बच्चे को चुरा लिया.

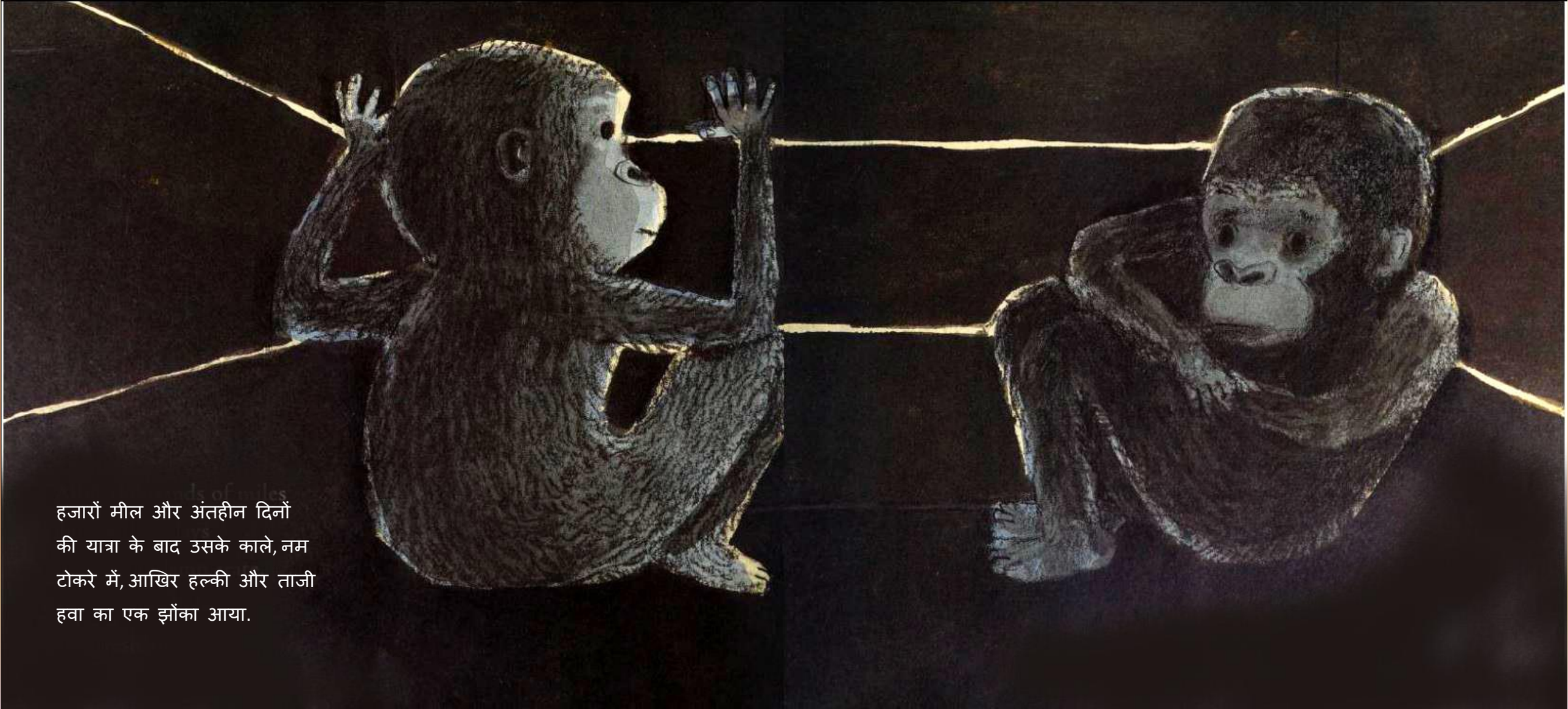

हजारों मील और अंतहीन दिनों
की यात्रा के बाद उसके काले, नम
टोकरे में, आखिर हल्की और ताजी
हवा का एक झोंका आया.

हरे-भरे जीवन से भरा जंगल अब बहुत दूर छूट चुका था.

दोनों गोरिल्लों ने आधी दुनिया का चक्कर लगाकर टैकोमा, वाशिंगटन तक का सफर तय किया. एक आदमी जो एक शॉपिंग मॉल का मालिक था, उसने उन दोनों गोरिल्लों का ऑर्डर दिया और उन्हें बिलकुल वैसे ही खरीदा जैसे कोई पिज्जा, या एक जोड़ी जूते खरीदता है.

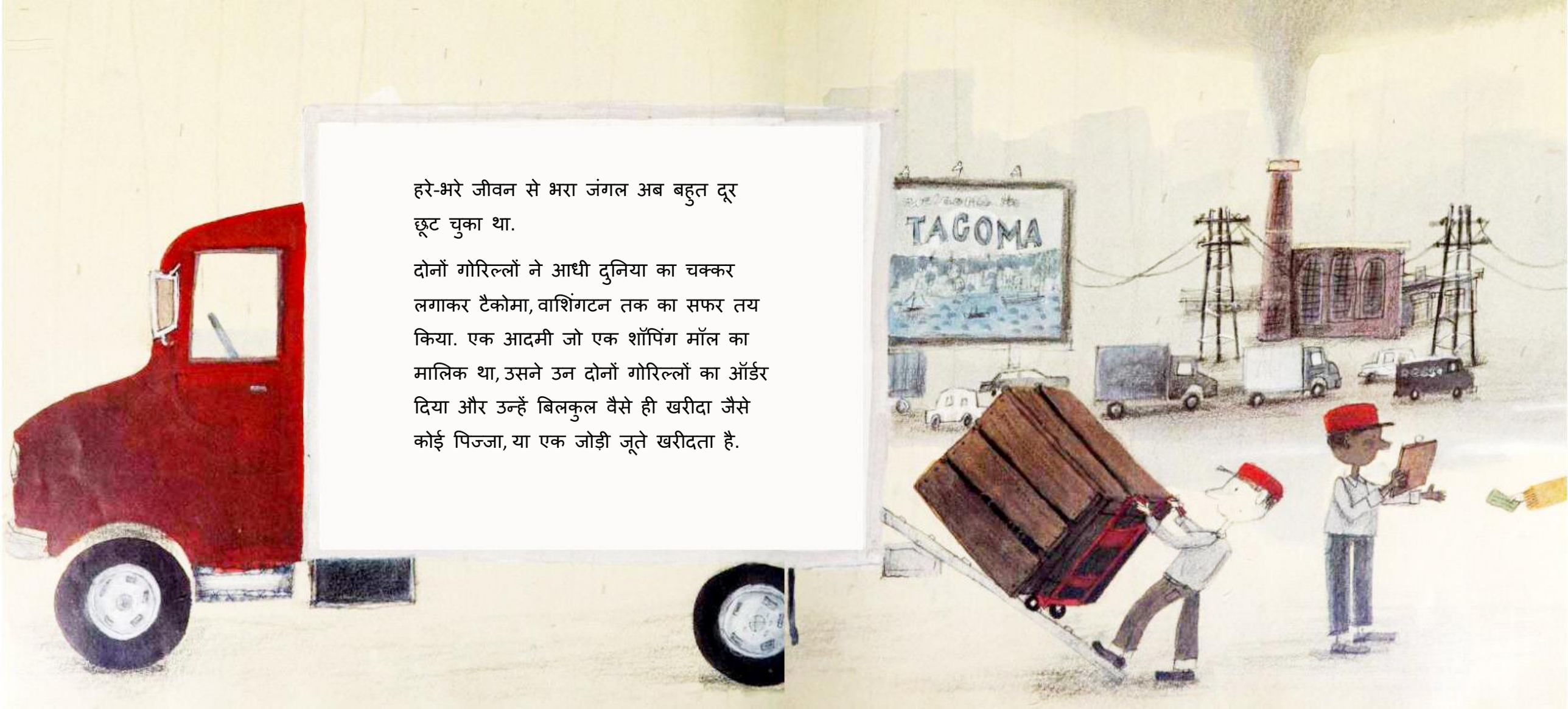

लोग उन दोनों गोरिल्लों को देखकर हँसते थे और उन्हें छूने की कोशिश करते थे.

दोनों गोरिल्लों को इंसानी कपड़े पहनाए गए और उन्हें इंसानी खाना खिलाया गया.

शॉपिंग मॉल के मालिक ने "गुरिल्लों के नामकरण" के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की.

जीतने वाले नाम थे - बर्मा और इवान.

गुरिल्लों के इस अजीब नई दुनिया में
आने के तुरंत बाद एक काले दिन,
उनमें से एक - बर्मा की, मृत्यु हो गई.

उसके बिना, इवान बिल्कुल अकेला रह
गया. उसके सीखने के लिए अभी बहुत
कुछ बचा था.

जब वो छोटा था, तब
इवान बहुत प्यारा था.

तीन साल तक वो एक
इंसानी बच्चे की तरह
घर में ही रहा.

वो एक बिस्तर पर
सोता था और
बेसबॉल के खेल
देखने जाता था.

वो बच्चों को गोद में उठाता था और
मोटरसाइकिल की सवारी करता था.

उसे ऐसी तमाम चीजें सीखनी पड़ीं जिन्हें जंगल में गोरिल्लों को कभी जरूरत नहीं पड़ती.

इवान को एक चीज सीखने की बिलकुल जरूरत नहीं पड़ी – खाने की.

जितना अधिक उसने खाया, वो उतना ही अधिक बढ़ता गया.

जितना अधिक वो बढ़ा, वो उतना ही कम देर लोगों के घर में रह पाया.

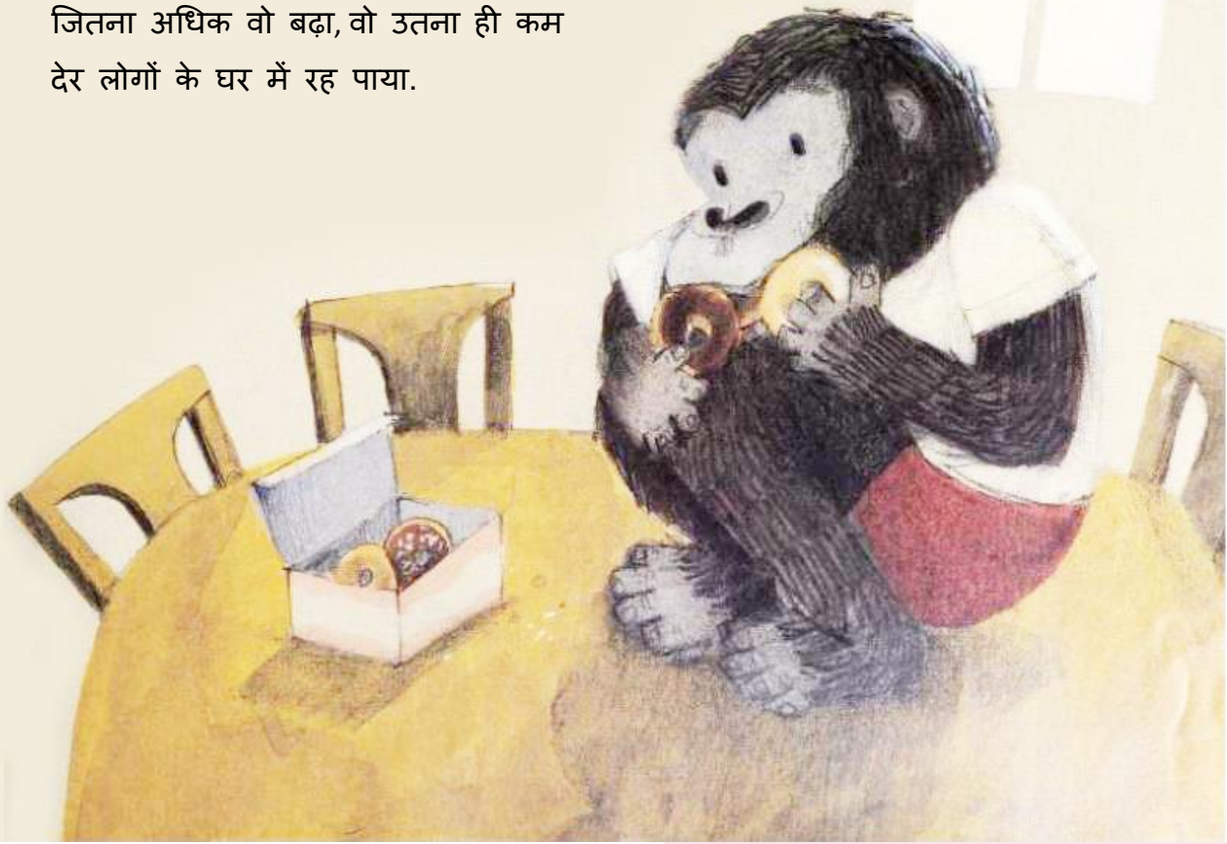

फिर शॉपिंग मॉल में एक पिंजरा इवान का नया घर बन गया. पर वहां करने के लिए उसके पास बहुत कुछ नहीं था.

कभी-कभी इवान टीवी देखता था.

कभी-कभी वो एक पुराने टायर से खेलता था

कभी-कभी वो उंगली से पेंट करता था, और कागज पर अपने अंगूठे के निशान से हस्ताक्षर करता था.

अधिकतर, वो लोगों को अपनी और घूरता हुआ पाता था.

इवान लगभग तेरह साल का था जब उसका कोट, चांदी के रंग के सफेद बालों से झिलमिलाने लगा.

अब वो एक सिल्वरबैक गोरिल्ला बन गया था.

इस उम्र में वो जंगल में अपने परिवार की रक्षा के लिए एकदम तैयार होता.

लेकिन यहाँ पर उसके पास सुरक्षा के लिए कोई परिवार नहीं था.

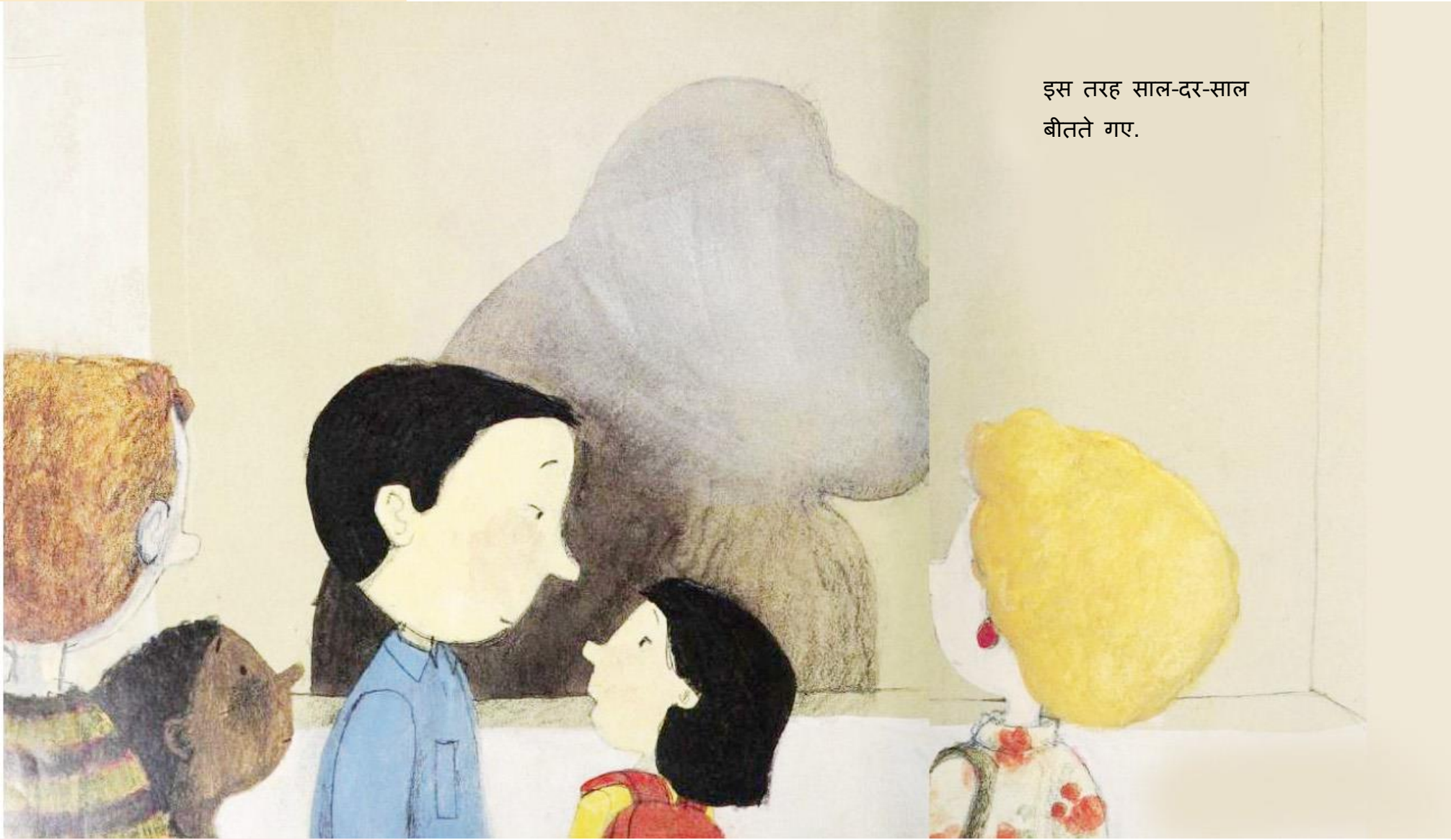

इस तरह साल-दर-साल
बीतते गए.

इवान के एकाकी जीवन
को लेकर लोगों का गुस्सा
बढ़ने लगा. बच्चों और
वयस्कों ने पत्र लिखे,
याचिकाओं पर हस्ताक्षर
किए और विरोध प्रदर्शन
किए.

दूसरे स्थान पर भेजे जाने से पहले इवान सत्ताईस साल तक अन्य गोरिल्लों की कंपनी के बिना अपने पिंजरे में शॉपिंग मॉल में ही रहा.

पर अब वो अच्छे हाथों में था.

अटलांटा का चिड़ियाघर कोई जंगल नहीं था.

वो दीवारों वाला स्थान था. फिर भी, वहां की हवा अपने साथ जंगल की आवाजें और सुगंध लाती थी.

गोरिल्लों की जरूरतों को समझने वाले वैज्ञानिकों ने धीरे-धीरे, सावधानी से, इवान को अपने नए जीवन में घुल-मिलने में मदद की.

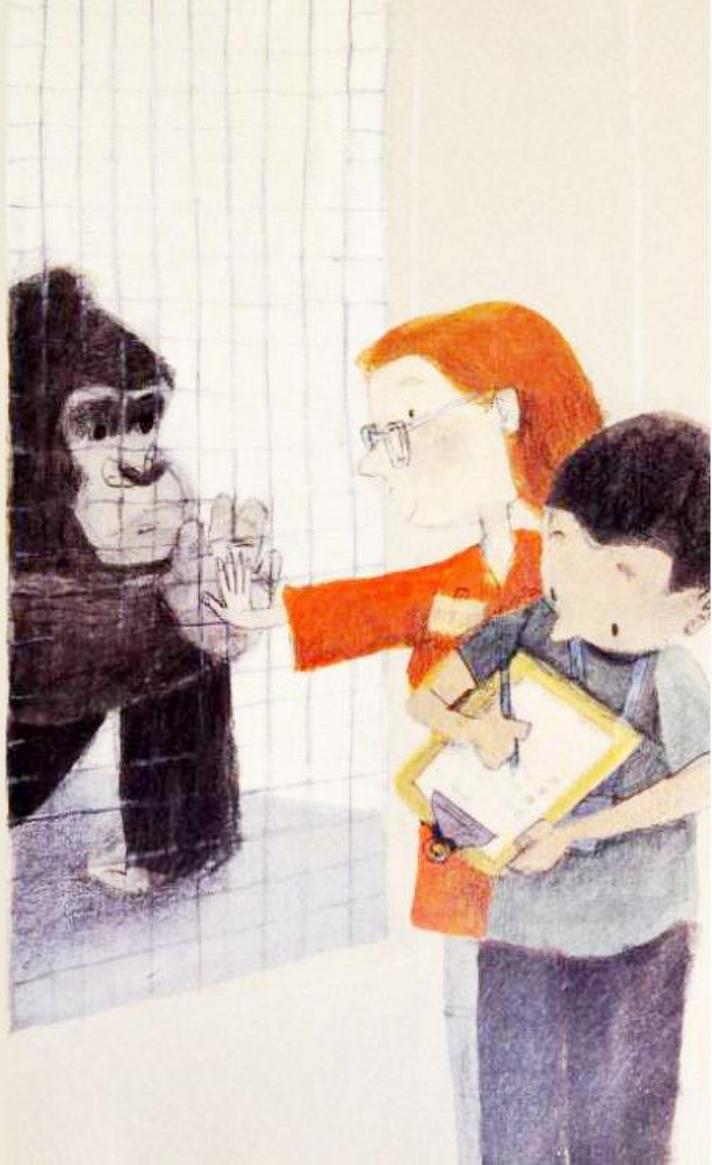

अंत में, इवान के जाने का समय
आ गया. क्या इवान उसके लिए
तैयार था? कैमरों ने क्लिक किया.
पत्रकारों ने उसे गौर से देखा.

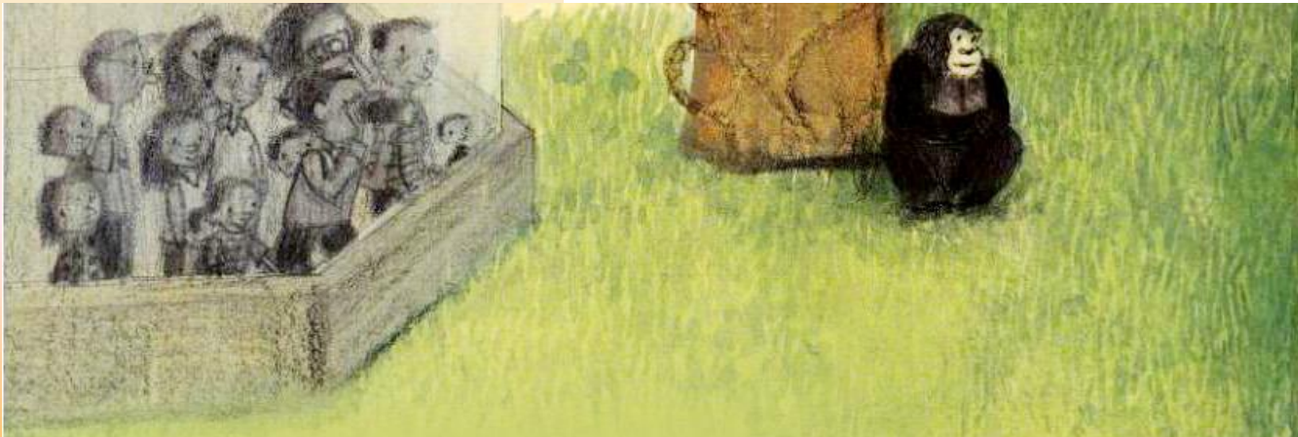

जब इवान ने ठंडी हरी घास पर कदम रखा, तब उसके चांदी के बालों पर सूरज की रोशनी चमक रही थी. उसे देखकर लोग खुशी से झूम उठे. कुछ लोग हँसे और कुछ रो पड़े.

इवान, शॉपिंग मॉल गोरिल्ला, अंत में पेड़ों और घास वाले स्थान पर अन्य गोरिल्लों के साथ रह रहा था.

पत्तेदार शांति में, कोमल बाहों में, उस गोरिल्ले ने एक नया जीवन फिर से शुरू हुआ था.

इवान के बारे में

इवान के प्रारंभिक जीवन के तथ्य अच्छी तरह से दर्ज नहीं हैं, लेकिन जहाँ तक हम जानते हैं, इवान का जन्म 1962 में कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में हुआ था. वो लगभग छह महीने का था जब वो ऐसे शिकारियों, द्वारा पकड़ा गया जो अवैध रूप से जंगली जानवरों को पकड़ते थे और अक्सर उन्हें मार डालते थे.

पता नहीं कि इवान के परिवार के साथ क्या हुआ, लेकिन उसके साथ शिकारियों ने एक अन्य युवा महिला गोरिल्ले को भी पकड़ा था, जो इवान की टुकड़ी से अलग किसी अन्य मां की शिशु थी. दोनों गुरिल्ले बच्चों को टैकोमा में बी-एंड-आई सर्कस स्टोर में भेज दिया गया. वो एक शॉपिंग सेंटर था जो अक्सर ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए हाथी, सील और चिंपांज़ी सहित अन्य जंगली जानवरों को जंगलों से विस्थापित करता था.

अपने नवीनतम अधिग्रहण का विज्ञापन करने के लिए, बी-एंड-आई ने गुरिल्ला शिशुओं को सर्वश्रेष्ठ नाम देने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की. नामों का "बी" और "आई" से शुरू होना ज़रूरी था. विजेता को पांच सौ डॉलर मिले.

छोटी मादा गोरिल्ला - बर्मा, संयुक्त राज्य अमेरिका में आने के कुछ ही समय बाद मर गई, लेकिन इवान बच गया. अगले तीन वर्षों तक वो एक ऐसे परिवार के घर में रहा, जो बी-एंड-आई शॉपिंग मॉल में एक पालतू जानवरों की दुकान चलाता था. वहाँ रहते हुए, इवान का एक बहुत ही मानवीय अस्तित्व था. उसे विशेष रूप से तला हुआ चिकन खाना, और लैंप और पर्दे से झूलना पसंद था.

पांच साल की उम्र में जब वो घर पर संभालने के लिए बहुत बड़ा हो गया तब इवान को बी-एंड-आई शॉपिंग मॉल में एक बाड़े में रखा गया. फिर इवान ने अपना अधिकांश समय एक छोटे चौदह फुट के स्टील और सीमेंट के कमरे में बिताया. वो जल्दी ही एक लोकप्रिय आकर्षण बन गया और एक शॉपिंग मॉल गोरिल्ले के रूप में जाना जाने लगा.

इवान के लिए दिन में बहुत कम काम होता था, हालांकि उसे फिंगर-पेंटिंग करने में मज़ा आता था, और वो अक्सर टेलीविजन देखता था. कई बच्चे इवान के पास नियमित रूप से जाते हुए बड़े हुए थे. वे उसकी आँखों में घूरते थे, या अपने हाथों को इवान की खिड़की पर दबाते थे, और उसके कूदने का इंतज़ार करते थे.

सत्ताईस वर्षों तक इवान अपने इस पिंजरे में रहा. इस बीच लोग बंदी जंगली जानवरों की जरूरतों के बारे में अधिक जागरूक हुए. यह विचार कि जानवरों को ऐसे आवास की आवश्यकता होती है जो उनके प्राकृतिक वातावरण की नकल करें, साथ ही उन्हें अपनी की प्रजाति के जीवों की कंपनी चाहिए होती है यह बात लोगों को समझ में आने लगी.

1990 में जब इवान की कहानी *नेशनल ज्योग्राफिक* की डॉक्यूमेंट्री "द अर्बन गोरिल्ला" में दिखाई गई, तो उसकी दुर्दशा के बारे में लोगों को व्यापक रूप से पता चला.

कई समाचार पत्रों ने उनकी कहानी को कवर किया, और वास्तव में, मुझे पहली बार 1993 में इवान के बारे में *न्यूयॉर्क टाइम्स* में एक लेख से पता चला, जिसका शीर्षक था "गोरिल्ला सल्क्स इन ए मॉल एज़ हिज फ्यूचर इज डिबेटिड."

जैसे ही इवान की स्थिति से निराशा बढ़ी, कई स्थानीय निवासियों, बच्चों और वयस्कों ने इवान के हालात का विरोध करने के लिए बी-एंड-आई का बहिष्कार किया. इवान के समर्थकों ने "फ्री द गोरिल्ला" रैलियां निकालीं. उन्होंने स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय अधिकारियों को गुस्से से भरे पत्र लिखे और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि इवान की कहानी को समाचार पत्रों में व्यापक कवरेज मिले. एक ग्यारह वर्षीय पांचवी-क्लास की लड़की ने "फ्री इवान" याचिका पर 1500 से अधिक हस्ताक्षर भी एकत्र किए.

1994 में, सिएटल के वुडलैंड पार्क चिड़ियाघर की मदद से, इवान को चिड़ियाघर अटलांटा में स्थानांतरित कर दिया गया. वो एक प्रमुख सुविधा थी जहाँ पर 1.5-एकड़ के प्राकृतिक आवास में फैली, देश की सबसे बड़ी गोरिल्ला आबादी रहती थी.

इवान को धीरे-धीरे अपने नए जीवन के अभ्यस्त होने की आदत पड़ी. पहले तो वो दूसरे गोरिल्लों से डरता था, लेकिन धीरे-धीरे वो उनके साथ घुलमिल गया. इवान के अपने बच्चे नहीं थे, लेकिन उसे चिड़ियाघर में किशोर गोरिल्लों और मादाओं के साथ खेलने में मज़ा आता था. गीले मौसम के प्रति उसकी नापसंदगी जग जाहिर थी और वो अपने पैरों को गीली घास से बचाने के लिए अक्सर अपने साथ एक बोरा लेकर चलता था. जो लोग उसे जानते थे, उन्हें आखिरकार वो खुश और संतुष्ट लगा.

इवान का 2012 में, पचास वर्ष की आयु में निधन हो गया. अब कैद में रहने वाला सबसे पुराना गोरिल्ला बावन साल का है जबकि जंगल में गोरिल्ले आमतौर पर केवल तीस वर्ष तक ही जीवित रहते हैं. चिड़ियाघर अटलांटा ने अपने प्रिय सेलिब्रिटी गोरिल्ले के लिए एक स्मारक सेवा आयोजित की, जिसमें पूरे देश के लोगों ने भाग लिया. इवान को उसके विचित्र व्यक्तित्व और अपने रखवालों के साथ प्रेमपूर्ण संबंधों के साथ-साथ, सभी जानवरों के साथ दयालुता के साथ व्यवहार करने का प्रतिनिधित्व करने के लिए याद किया जाता है.

अपने जीवन के अंतिम वर्षों के दौरान चिड़ियाघर अटलांटा में इवान के मुख्य देखभाल करने वाले रक्षक (कीपर) जोडी कारिगन ने अपने दोस्त की यादें साझा कीं:

इवान पिछले दस वर्षों से मेरा सबसे अच्छा दोस्त था, और मैं एक ऐसे अनोखे और अद्भुत जानवर की देखभाल करने के कारण ही आज मैं एक बेहतर रक्षक बना हूं. उसने हमें बहुत प्यार दिया, और मुझे लगता है कि उसने अटलांटा चिड़ियाघर में हमारे साथ अपने अठारह वर्षों में उतना ही आनंद लिया जितना हमने उसे यहाँ पाकर आनंद लिया.

हर बार जब मैं इवान के बारे में सोचता हूं तो मैं मुस्कुराता हूं और याद करता हूं कि मुझे देखकर वो कितना खुश होता था. खासकर जब मैं सुबह काम पर आता था तो वो मेरा बड़ी ख़ुशी से सत्कार करता था. वो बहुत विनम्र और प्यार करने वाला प्राणी था और वो हमेशा मुझे हंसाता रहता था.

इवान को पेंटिंग करना बहुत पसंद था, जो इस बात से स्पष्ट था कि जब मैं उसे पेंटिंग का सामान देता था तो वो कैसे जल्दी से आता था और खुशी से शोर मचाता था. मैं उसे कई रंग दिखाता था और फिर वो उस रंग की ओर इंगित करता जिसका वो उपयोग करना चाहता था - उसका पसंदीदा रंग लाल था. मैं उसे कैनवास पर रख देता और उसे ब्रश दे देता था. पेंटिंग ख़त्म करने के बाद वो ब्रश मुझे वापस सौंप देता था. अपने फिनिशिंग टच के लिए, वो हर बार अपने फिंगरप्रिंट से हस्ताक्षर करता था.

वाशिंगटन राज्य में इवान के प्रशंसकों की बहुत बड़ी संख्या थी. इवान का फैन क्लब तब बढ़ा जब वो अटलांटा आया. उसने हजारों लोगों का दिल जीता, और ऐसा कोई दिन नहीं होता है जब मुझे उसकी याद न आती हो. इवान का जीवन इस बात का प्रतीक था कि कैसे जानवर हमारे जीवन को बदलते हैं. . . और हम में भी उनके जीवन को आकार देने की शक्ति होती है.

इवान द्वारा बनाई एक पेंटिंग